सफर का महीना –
इसलामी दृष्टिकोण

इसलाम सत्य व सच्चाई का धर्म है। जिस ने तौहीद व रिसालत (एकेश्वरवाद व पैगम्बर) के विश्वास के दीपक से संसार को रोशन व उजागर किया और हर प्रकार कि असत्य रीति-रिवाज ओर मुशरिकाना वहम (अन्ध विश्वास) को समाप्त किया।

अज्ञानता के नादान रीति-रिवाज व मुशरिकाना आरोप में यह बात भी थी के लोग इसलाम के दूसरे महीने सफर को अशुभ व मनहूस समझते थे और इस से बदशगुनी लेते थे। इस काल में लोगों का विश्वास था के इस माह कि पदार्पण के कारण से वह समस्या व बलैयात में घेरे जाते हैं।

और समाज बर्बाद व विनाश हो जाता है। वह यह विश्वास (अखीदह) रखते थे के इस मास के कारण वह बीमारियों (रोग व पीड़ा) में व्यर्थ हो जाते हैं। और यह नज़र रखते थे के इस मास में नहूसत होती है। कोई बडा कार्य या कोई नव कर्तव्य का प्रारम्भ इस मास में नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के झूठे अखीदों (विश्वास व यक़ीन) को वह अपने दिल तथा हृदय में स्थान देते थे।

इसलाम ने इन तमाम झूठे विचारण को समाप्त कर दिया। इ़मान व अखीदह (श्रद्धा व विश्वास) उदारता वर्णन यह शासन दिया के समस्या व आपत्ति का संबंध किसी मास व वर्ष से नहीं है बल्कि वह नेकोकार (गुणकार व वास्तविक) के लिए अल्लाह तआ़ला कि ओर से परिक्षा व कसौटी और पापी के अधिकार में इस कि बदअ़मलियों (बुरे कर्तव्य) का परिणाम है।

अल्लाह तआ़ला अनुदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है वह तुम्हारे अपने ही हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ क्षमा कर देता है।

(सुरह अश शूराः 42:30)

अज्ञानता में लोग पक्षी को फाल लिया करते थे। यदि पक्षी सीधी ओर उड़ा तो फाल कुशल लिया करते तथा यदि ऊपर या पीछे की ओर उड़ता तो ये समझते थे के हम जो उद्देश्य रखते हैं।

वह होगा तो अवश्य लेकिन इस में विलम्भ होकी तथा यदि पक्षी बायें ओर उड़ गया तो वह इस से बदशगुनी लेते के हमारा कार्य नहीं बन पाएगा।

"ह़ुखाब" पक्षी को देख लेते तो चिन्तित हो जाते तथा बुरे परिणाम से इस का शगुन लेते। क्यों के इस का अर्थ अज़ाब के हैं। यदि ग़ुराब अर्थ कौआ को देखते तो इस से कठिनाई तथा दरिद्रता का फाल लेते तथा *हदहद* पक्षी को देखते तो मार्गदर्शन तथा श्रेष्ठता से इसे तात्पर्य करते।

नबी रहमत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अज्ञानता के भ्रामक विश्वास (अखीदह) कि ओर जाने से रोकते हुए फरमायाः-

भाषांतरः- कोई रोग तथा बीमारी फैलने वाली नहीं होती, बदशगुनी जाइज़ नहीं, औऱ सफर के महीने में कोई नहूसत नहीं। (सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 5380, ज़ुजाजतुल मसाबीह, अंक 3, पः 446)

कुशल व अंमगल तथा अल्लाह की इच्छा

वास्तव में कुशल व भलाई प्रदान करने वाला अल्लाह तआ़ला ही है। विश्राम व शान्ति दान करने का इसी के ज़िम्मे है तथा प्रत्येक प्रकार की

सफलता प्रदान करने वाला वही पालनहार है। वही विश्राम व शान्ति देता है। वही रहमत की वर्षा करता है।

इस के साथ-साथ वह अपने बन्दों व सेवकों को परीक्षण करता है। कभी वरदान से आभूषण कर के परीक्षण करता है। कभी कठिनाई व तकलीफ के द्वारा परीक्षण करता है के कौनसा बन्दा अपने रब की कृपा व करम पर इसके दरबार में सम्मिलन होता है तथा कौन दूरी प्राप्त कर लेता है।

पालनहार ये स्पष्ट करता है के बन्दा इस के वरदानों पर धन्यवाद व कृतकृत्य करने लगता है या इस के दरबार से निवृत् करता है। परीक्षा पर धीरज व धैर्य करता है या मायूस हो कर सत्य के द्वार से दूरी प्राप्त कर जाता है।

क़ुरान व हदीस पाक के आधार के रोशन रास्तों पर चलता है या आज्ञालंघन की अंधेरियों में भटक जाता है। जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और जब मानव पर हम सुखद कृपा करते हैं तो वह मुँह फेरता तथा अपना पहलू बचाता है। किन्तु जब उस तकलीफ पहुँचती है, तो वह निराश होने लगता है। अए हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! आप फरमा दीजिएः हर एक अपने ढब पर काम कर रहा है, तो अब तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है कि कौन अधिक सीधे मार्ग पर है।

(सुरह बनी इसराईलः 17:83-84)

हर मुसलमान का यही विश्वास है के अच्छी तथा बुरा भाग्य अल्लाह तआ़ला ही की ओर से होता है तथा वरदान का दान इस की ओर से है। कठिनाई का आना भी इस की नीति से है वसंत व कोंपल इस की ओर से है तथा तूफान व अकाल भी इस की ओर से है।

जान व धन की सुरक्षा भी इसी की ओर से है तथा जान पर आने वाली विपत्ति तथा धनकी हलाकत भीइसी के आदेश से है। अतः प्रत्येर रूप से वह अपने बन्दों की परीक्षा लेता है। जब अल्लाह तआ़ला तथा इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ज़ात पर इ़मान है तो फिर परीक्षा तथा निरीक्षण अवश्य हुआ करता है। अल्लाह तआ़ला आदेश करता हैः-

भाषांतरः- अलिफ़ लाम मीम, क्या लोगों ने ये समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि "हम ईमान लाए", तथा उनकी परीक्षा ना की जाएगी?।

(सुरह अल अनकबूतः 29:1-2)

हमारी सोंच व विचार इस बात पर ठेलते हैं के सफर का महीना आ चुका है। पता नहीं के हमारे ये दिन कैसे बीतेंगे, किस बला में हम व्यस्त होंगे, कौन सी बीमारी हमें लगने वाली है?

याद रहे के दिन तथा रात कठिनाई व समस्या नहीं लाते, किसी महीने के पदार्पण के कारण विपत्ति नहीं आती। बल्कि सच्चाई कि नज़र से देखा जाए तो हमारी बदअ़मालियों (बुरे कर्म) ही इन बलाओं व विपद का कारण होते हैं और सफर का मास से संबंध हमें ध्यान करना चाहिए के कहीं हमारे झूठे वहम हमें फितनों और कठिनाई में घेरे जाने का कारण तो नहीं बन गएं?

हम अपनी दुनिया तथा आखिरत (मरणोत्तर जीवन) के कूल तत्व को अल्लाह तआ़ला और इस के वैभवशाली रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के परित्याग (आत्मसमर्पण) कर दें तो ना हम शक व संदेह में व्यस्त होंगे और ना ऐसे विचार कि ओर आकर्षित होगी।

समूद जाति का अंधविश्वास

क़ुरान करीम में समूद जाति व क़ौम का अंधविश्वास तथा इन की बदशगुनी का वर्णन किया गया के इन्हों ने भूक व प्यास के ड़र से अल्लाह की निअ़मत को ठुकराया। वह ऊँटनी जो अल्लाह के प्रतीक बना कर इन की ओर भेजी गई थी।

इस ऊँटनी को इन्हों ने ज़िबा कर दिया। सरकशी करते रहे। अल्लाह तआ़ला की आज्ञालंघन के कारण से अज़ाब में व्यस्त कर दिए गए तथा इन्हों ने अपने पावन नबी सालेह अलैहिस सलाम का अस्थित्व तथा आप के संप्रदाय का इन के बीच रहना भी पसंद ना किया तथा कहने लगे के हम आप से तथा आप की सेवा में रहने वालों से बुरा शगुन लेते हैं के ये कठिनाई हम पर तुम्हारी ही कारण से आ पड़ी है। जैसा के क़ुरान करीम में उपलब्ध हैः-

भाषांतरः- उन्होंने कहाः "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, तुम भलाई से पूर्व बुराई के लिए क्यों जल्दी मचा रहे हो? तुम अल्लाह से क्षमा याचना क्यों नहीं करते"? कदाचित तुमपर दया की जाए।

(सुरह अन नम्लः 27:47)

इस घटना से हमें यही रोशनी मिल रही है के विपत्ति व कठिनता से मिलना अपने ही कर्मों का परीणाम है। इसे किसी और की ओर करना, ये मुसलमानों का तरीका नहीं बल्कि अल्लाह के इन्कार करने वालों का तरीका है। जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है वह तुम्हारे अपने ही हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ क्षमा कर देता है।

(सुरह अश शुराः 42:30)

अशुभ शुगन करने की निषेध

जहाँ तक बदशगुनी का संबंध है सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ऐसे विचारण को गलत घोषित कर दिया और तोहमपरस्ती के सोचविचार को निरर्थक घिषित किया।सूनन अबु दाउद और सूनन तिरमिज़ी हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः- बदशगुनी लेना शिर्क जैसा कर्म है। आप ने इस को 3 बार फरमाया। (सूनन तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 1712, सूनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 3912)।

हज़रत मुल्ला अ़ली खारी रहमतुल्लाहि अलैह इस का विस्तार करते हुए कहा हैः-

भाषांतरः- बदशगुनी लेना शिर्क है। क्यों के अज्ञानता के दौर में लोगों का विश्वास था के बदशगुनी के आवश्यकता पर कार्य करे से इन को लाभ प्राप्त होता है या इन से हानि तथा परेशानी दूर होती है तथा जब इन्हों ने इस के आवश्यकता पर कर्म किया तो अतः इन्हों ने अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क किया। तथा इसे शिर्क खफी कहा जाता है। तथा किसी व्यक्ति ने ये विश्वास रखा के लाभ दिलाने तथा कठिनाई में व्यस्त करने वाली अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई चीज़ है जो एक स्वयं शक्ति है तो इस ने शिर्क जली किया है।

(मिरखात उल मफातीह, शरह मिशकात उल मसाबीह, जिल्द 04, पः 522)

अल्लामा खाज़ी इ़याज़ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः- सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इसे शिर्क इस लिए फरमाया के लोग ये विश्वास करते थे के जिस चीज़ से इन्हों ने बदशगुनी ली है वह कठिनाई व मुसीबत के प्रकट होने में प्रभावित कारण है

तथा इन माध्यम का अनुसार व स्वीकार करना शिर्क खफी है। विशेष रूप से इस के साथ अज्ञानता तथा अंधविश्वास भी हो तो इस का शिर्क खफी होना तथा भी स्पष्ट है।

(मिरखात उल मफातीह, जिल्द 04, पः 522-523)

सुनन अबु दाउद शरीफ की एक रिवायत है, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अनुदेश फरमायाः-

भाषांतरः- पक्षी के द्वारा फाल लेना, किसी चीज़ से बदशगुनी लेना और कंकड़ियों से फाल निकालना राक्षसों कार्य है। (सूनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 3909)

सफर का महीना अभागा नहीं

सहीह बुखारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- कोई बीमारी खुद से नहीं होती, बदशगुनी जाइज़ नहीं, उल्लू तथा सफर के महीने में कोई अमंगलकारी व अशुभ नहीं।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 5380)

हज़रत सैयदी अबुल हसनात सैय्यद अबदुल्लाह शाह साहब नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह इस के अनुवाद करते हुए ज़ुजाजातुल मसाबीह में लिखते हैः-

भाषांतरः- इमाम अबु दाउद ने अपनी सुनन में वर्णन किया के मुहद्दिस बखिया ने इस हदीस के बारे में अपने अध्यापक मुहम्मद बिन राशिद से पूछा तो इन्हों ने फरमायाः अज्ञानता में लोग सफर के महीने के आगमन को मनहूस समझते थे तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस सच्चाई को स्पष्ट करते हुए आदेश फरमाया के सफर का महीना

मनहूस नहीं है। अल्लामा खाज़ी इयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः इस हदीस पाक से बहम का सच्चाई हो जाती है जो सफर के महीने से संबंधित किया जाता है के इस में विपत्ति व आफत अधिकता से प्रकट हुआ करती है।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 03, पः 447)

उपर्युक्त वर्णन आयत व हदीस शरीफ कि रोशनी में निर्धारित व स्पर्श हो जाता है के सफर के महीने को मनहूस समझना गैर-इसलामी है।

सफर के महीने में *विवाह* से बचना और खुशी व कुशलता के समारोह को अशुभ समझना यह बेलाभ कर्तव्य हैं और अज्ञानता के झूठे आरोप की उत्पत्ति हैं। जिन के इसलाम धर्म में कोई गुंजाईश नहीं। सफर के मास कि ऐतिहासिक स्थिति भी यदि देखी जाए तो एक रिवायत के अनुसार सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने हज़रत बीबा फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का विवाह हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसी धन्य महीने में करवाया था। अतः नामवर रिवाय माह शव्वाल के अवसर की है। सफर की महीनेमें विवाह से संबंधित रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत जअ़फर बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन करते हैं के हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से 2 हिज्री सफर के महीने में विवाह किया तथा आप की विदाई प्रवासन के बाद 22 महीनों के बाद ज़ुल खअ़दा के महने में हुई।

(सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 12, पः 469)

कुछ लोग सफर के महीने में किसी महत्व कार्य के लिए यात्रा करना भी उचित नहीं समझते। जबके हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि

वसल्लम ने प्रवासन के अवसर पर मक्के से मदीने तैयिबा यात्रा का प्रारम्भ एक रिवायत के अनुसार सफर के महीने के अंत में किया था।

(शरह अल ज़ुरखानी अलल मवाहिब, जिल्द 2, पः 102)

सफर का महीना सफलता व विजय का महीना

ये सफर का महीना इसलाम धर्म की असामान्य व अनोखी सफलता तथा मुसलमानों की विजय का कारण साबित हुआ। रहमते वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यही वह यात्रा था जो अपने भीतर मक्के पर विजय के उत्तमता को लिए हुए था।

सफर के महीना प्रवासन करना तथा इसलाम के प्रचार का माध्यम घोषित पाया। बलाओं के प्रकट होने का नहीं बल्कि कठिनाई व समस्या के दूर होने का कारण बना। इसी कारण से हमारे अक्षर में सफर के महीने को सफर उल मुज़फ्फर कहते हैं जिसका अर्थ विजय वाले के हैं।

मुसलमानोंको ऐसी बदशगुनी से अत्यन्त रूप से परहेज़ करना चाहिए। तथा इसी प्रकार तेरा तेज़ी के नाम से अण्डे तथा तेल आदि सरहाने रखना भी निर्थक कार्य है। इन कृत्य से भी दूर रहना अवश्य है। सम्पूर्ण रूप से अल्लाह तआ़ला की संतुष्टि केलिए ग़रीबों तथा दरिद्र को सदखा व दान करना अन्य महीनों के प्रकार इस मास में भी जाइज़ व प्रमाणित है।

समाज में यह विचारण भी सार्वजनिक है के माह सफर के अंत बुधवार को सैर व वायुसेवन का प्रबन्ध किया जाए।

इस दिन भ्रमण (घूमना) के लिए रवाना हों और घांस, हरियाली आदि पर चहल क़दमी इस विचारण के साथ कि जाए के बला और वबा से सुरक्षा हो जाती है और समस्या समाप्त हो जाते हैं तो इस का इसलामी पुस्तकों से कोई साक्षी (सबूत) नहीं मिलता।

यदि कोई इसी पर निर्णय करे तो कहा जाएगाः- यदि तुम यह समझते हो के अंत बुधवार को बलाएं अधिक प्रकट होती हैं, तो ऐसी परिस्थिति में सैर व वायुसेवन नहीं बल्कि इ़बादत अधिकता से की जानी चाहिए। पुण्य व भलाई कि फिक्र करनी चाहिए और दान व परोपकार करना चाहिए। क्यों के इस से अल्लाह का ग़ज़ब दूर हो जाता है तथा अल्लाह तआ़ला की संतुष्टि के लक्षण प्रकट होते हैं। जैसा के जामेअ़ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने कहा के हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः निश्चय सदखा तथा नेकी पालनहार के रोष व क्रोध की आग को ठण्डा करती है तथा बुरी मृत्यु से मुक्त करती है।

(जामेअ़ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 666, शुअ़बुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3202)

सफर के महीने में ये दुआ़ पढ़े-

जब भी कोई व्यक्ति कठिनाई से दुर्बल हो तो इसे अपने कर्म व कर्तव्य का सर्वेक्षण लेना चाहिए। अपने कर्मों में जहाँ आलस्य व उपेक्षा प्रकट हुई है इस की सुधार करनी चाहिए। जहाँ गलती हुई है इसे सुधारना चाहिए।

तौबा कर के अल्लाह तआ़ला सम्मिलन होना चाहिए क्यों के अपने बुर कर्मों ही से सम्पूर्ण समस्याओं का माध्यम होते हैं। अभी आप देख चुके हैं के नेक व भले सेवक को भी जीवन में अनेक प्रकार की समस्या व परीक्षा से गुज़रना पढ़ता है एवं ये अल्लाह तआ़ला की ओर से इस के लिए परीक्षा होती है।

जो लोग समस्या व कठिनाई पर धीरज व सहनशीलता के द्वारा सामना करते हैं वह इस परीक्षा में सफल व उतीर्ण हैं जिन के क़दम विपत्ति के कारण से नहीं लड़खड़ाते अल्लाह तआ़ला का पक्ष इनके साथ है।

ज़ुजाजातुल मसाबीह में सुनन अबु दाउद के हवाले से हदीस पाक व्याख्या हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना उ़रवा बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने कहाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में बदशगुनी का वर्णन किया गया तो आप ने फरमायाः अच्छा शगुन, फाल नेक है तथा बदशगुनी किसी मुसलमान के काम में रुकावट नहीं बनती। बस जब तुम में से कोई ऐसी चीज़ देखे जिसे वे अप्रसन्न करता है तो इसे चाहिए के वे ये दुआ़ पढ़े- भाषांतरः- अए अल्लाह प्रत्येक प्रकार की भलाईयों को लाने वाला तू ही है एवं सम्पूर्ण प्रकार की बुराईयों को दूर करने वाला भी तू ही है, ना बुराई से बचने की कोई शक्ति है ना नेकी व भलाई करने की कोई शक्ति है, परन्तु अल्लाह ही की मदद व सहायता से।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 03, पः 445 / सुनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 3921)

बुधवार अशुभ नहीं

ये सच्चाई है के एक दिन दूसरे दिन पर उत्तमता रखता है। एक समय दूसरे समय के समान बरकत व रहमत वाला होता है। किन्तु स्वयं किसी समय या दिन में अशुभ व अभागा का विचार ग़ैर-इसलामी दृष्टिकोण है। जहाँ तक बुधवार की बात है ते सहीह मुसलिम हदीस पाक में इस की उत्तमता आई है, सहीह मुसलिम व मुसनद इमाम अहमद आदि में हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से विस्तार रिवायत वर्णन हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर निर्देश कियाः अल्लाह तआ़ला ने शनिवार के दिन मिट्टी को पैदा किया, और नूर को बुधवार के दिन पैदा किया।

(सहीह मुसलिम, जिल्द 02, पः 371, हदीस संख्याः 7231 / मुसनद इमाम अहमद, हदीस संख्याः 8563 / सुनन कुबरा लिल बैहखी, जिल्द 09, पः 03 / सुनन कुबरा लिल नसाई, हदीस संख्याः 11010 / मुअ़जम अल औसत लित तबरानी, हदीस संख्याः 3360)

उपर्युक्त वर्णन हदीस पाक से मालूम हुआ के बुधवार वह पावन व धन्य दिवस है जिस में नूर की रचना हुई अर्थात ये विचार अनुचित है के इस में कोई बड़ा एवं महत्व कार्य नही करना चाहिए।

अर्थात इस दिवस कोई भी सुखी वाला जाइज़ कार्य परिणाम देना इनशाअल्लाह बरकत वाला ही होगा।

इमाम सक़ावी ने मखासिद हसना में लिखा हैः-

भाषांतरः- बुरहान उल इसलाम की तअ़लील अल मुताअ़लिम के हवाले से वर्णन किया के वह अपने अध्यापक हिदाया के लेखक अल्लामा मरग़िनानी रहमतुल्लाहि अलैह का तरीका वर्णन करते हैं के आप बुधवार के दिन अभ्यास व पाठ के प्रारम्भ का प्रबन्ध किया करते तथा इस सिलसिले में ये हदीस पाक रिवायत करते के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः बुधवार के दिनजिस चीज़ का भी आरम्भ किया जाए वह सफलता व निष्पत्ति को पहुंचती है।

(मखासिद उ़ल हसनह, हर्फ उ़ल मीम)

इसी कारण से विश्व विख्यात व इसलामी यूनवर्सिटी (विश्वविद्यालय) जामिया नाज़ामिया हैद्राबाद देक्कन में अभ्यास व शिक्षण के आरम्भ के लिए बुधवार के दिन का प्रबन्ध किया जाता है।

इस्तेग़फार - सम्पूर्ण परेशानियों का समाधान

यदि हम मुसलमान अपने दिल में अल्लाह के भय व ख़ौफ़ बिठाए रखें। इस की कृपया व करम के उम्मीदवार बने रहें एवं अपने स्थिति पर निन्दा के आंसू बहाएं तो अवश्य हमारे जीवन में बरकत रख दी जाएगी एवं हमारे बीच से दुःख व ग़म दूर कर दिया जाएगा एवं ग़म दूर कर दिया जाएगा।

इस सिलसिले में इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह की विवरण कबीर के हवाले से एक उपाख्यान घटना वर्णन की जाती है, जो हमारेलिए अत्यन्त अनमोल व लाभदायक हैः-

भाषांतरः- हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेवा में एक व्यक्ति उपस्थित हो कर अकाल से संबंधित निवेदन किया तो आप ने इसे इस्तेग़फार करने का निर्देश दिया। किसी दूसरे व्यक्ति ने अपनी दरिद्रता की स्थिति वर्णन की, इसी प्रकार किसी और व्यक्ति ने अपने बाग़ में फल व फूल तथा ताज़गी से संबंधित आप की सेवा में विनती की तथा सभों को इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्तेग़फार का निर्देशन किया। अल्लाह तआ़ला से क्षमा इच्छा रने तथा बख्शिश की याचना मांगने का आदेश दिया। लोगों को इस पर आश्चर्य हुआ। निवेदन करने लगे, आप की सेवा में लोग अलग-अलग विनती ले कर उपस्थित हुए तथा सम्पूर्ण सदस्य को आप ने अल्लाह तआ़ला से मुक्ति व मोक्ष की इच्छा करने का निर्देशन दिया। तो आप ने उत्तर देते हुए ये आय तिलावत की, भाषांतरः- तुम अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील है। वह बादल भेजेगा तुमपर ख़ूब बरसनेवाला, और वह

माल और बेटों से तुमहें बढ़ोतरी प्रदान करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा एवं तुम्हारे लिए नहरें प्रवाहित करेगा।

(सुरह नूहः 71:10,11,12)

अल्लाह के ज़िक्र में बिताया हर पल धन्य है

हज़रत इमाम हस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सम्पूर्ण लोगों की परेशानियों का समाधान अल्लाह के इस्तेग़फार पर घोषित किया तथा संप्रदाय को अल्लाह तआ़ला के दरबार की ओर सम्मिलित होने की शिक्षा दी।

आज हमें इसी चिन्ता को अपनाने की आवश्यकता है के हमारे दिन व रात अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में गुज़रते रहें। हम शरीअ़त की पाबंदी करें तथा क़ुरान करीम वह पर अ़मल करना है। अपने कर्मों का निरीक्षण करते रहें।

समय का सम्मान करें। अपने क्षण को उपेक्षा व लापरवाही में ना बिताएं। क्यों के अशुभ व अभागा हमारे जीवन में इसी समय आ सकती हैं जब हम अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की याद तथा इनके पालन व पैरवी से उपेक्षक रहें।

सुरह तौबा की आयत संख्या- 37 के प्रति रूह अल बयान के विवरण में वर्णन हैः-

भाषांतरः- हर वह पल जिस में मोमिन बन्दा अल्लाह तआ़ला के पालन में प्रयुक्त करता है। वह इस के अधिकार में बरकत वाला तथा आशीर्वाद का माध्यम है तथा हराम वह पल जिस में वह अल्लाह तआ़ला की आज्ञालंघन में व्यस्त रहा है। वह इस के अधिकार में बरकतों से रहित व विहीन है। वास्तव में अशुभ व अमंगलकारी पाप करने मे है।

निश्चय जिस समय को हम ने अल्लाह तआ़ला के पालन में गुज़ारा वह समय हमारे लिए बरकत वाला है। जिस पल को हम ने सुन्नतों पर अ़मल करने में बिताया वह पल हमारे लिए आशीर्वाद व धन्य वाला है। जिस घड़ी को हम ने इसलामी प्रावधान व अहकाम पर कर्तव्य व कृत्य करते हुए बिताया वह घड़ी हमारे लिए रहमत का माध्यम है।

अल्लाह तआ़ला हमारे मन व हृदय में कुशल विश्वास को प्रकाशित करे। भले कर्म करने की सम्पत्ति भाग्य में लिखे तथा क़ुरान व हदीस की शिक्षा पर अटल व स्थिर रहने का मार्गदर्शन प्रदान करे।

आमीन